

डैनियल की पुस्तक - संख्या पचपन

भविष्यवाणी के ताने-बाने का अनावरण: दानिय्येल को गब्रिएल का प्रकटीकरण

Jeff Pippenger

2024-01-19

गैब्रियल दानियेल के पास तब आया जब उसे यिर्मयाह की भविष्यवाणी में बताए गए बंधुआई के सत्तर वर्ष और मूसा की शपथ व श्राप समझ में आ गए थे।

उसके राज्य के प्रथम वर्ष में, मैं, दानिय्येल, ने पुस्तकों से उन वर्षों की संख्या समझी, जिनके विषय में प्रभु का वचन भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह के पास आया था, कि यरूशलेम के उजाड़ पड़े रहने के सत्तर वर्ष पूरे होंगे। . . . हाँ, समस्त इस्राएल ने तेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया है, हटकर इस प्रकार कि वे तेरी वाणी का पालन न करें; इसलिए शाप हम पर उंडेला गया है, और वह शपथ जो परमेश्वर के दास मूसा की व्यवस्था में लिखी है, क्योंकि हमने उसके विरुद्ध पाप किया है। और उसने अपने वचनों की पुष्टि की है, जो उसने हमारे विरुद्ध और हमारे न्यायियों के विरुद्ध, जो हमारा न्याय करते थे, कहे थे, हम पर बड़ी विपत्ति लाकर; क्योंकि सारे आकाश के नीचे ऐसा नहीं किया गया जैसा यरूशलेम पर किया गया है। जैसा कि मूसा की व्यवस्था में लिखा है, यह सारी विपत्ति हम पर आ पड़ी है; तौभी हमने अपने परमेश्वर प्रभु के सामने प्रार्थना नहीं की, कि हम अपनी अधर्मताओं से फिरें और तेरी सच्चाई को समझें। इस कारण प्रभु ने इस विपत्ति पर ध्यान रखा और उसे हम पर ले आया; क्योंकि हमारा परमेश्वर प्रभु जो कुछ करता है, उन सब कार्यों में धर्मी है; क्योंकि हमने उसकी वाणी का पालन नहीं किया। दानिय्येल 9:2, 11-14.

दानिय्येल ने जिस शब्द का प्रयोग किया है, जिसका अनुवाद "the oath" के रूप में किया गया है, वही शब्द मूसा ने लैव्यव्यवस्था अध्याय छब्बीस में प्रयोग किया है, जिसका अनुवाद "seven times" के रूप में किया गया है। सिस्टर व्हाइट हमें बताती हैं कि अध्याय नौ में दानिय्येल यिर्मयाह की सत्तर वर्षों की अवधि और तेईस सौ वर्षों की अवधि के संबंध को समझने का प्रयास कर रहे थे। अध्याय आठ में गब्रिएल को यह आज्ञा दी गई थी कि वह दानिय्येल को तेईस सौ दिनों के दर्शन को समझाए, और अध्याय नौ में लौटकर गब्रिएल अपना कार्य पूरा करते हैं तथा दानिय्येल को यह बताते हैं कि अध्याय सात, आठ और नौ का विषय रहे उन दो दर्शनों को मानसिक रूप से अलग-अलग कर लें। वे दोनों दर्शन उस "ज्ञान की वृद्धि" का विषय हैं जिसकी मुहर 1798 में खोली गई थी।

यिर्मयाह के सत्तर वर्ष और मूसा का "शाप" दोनों "सात गुना" के प्रतीक हैं, जैसा कि मूसा की "शपथ" द्वारा निरूपित है; परंतु गब्रिएल तेईस सौ वर्षों की अवधि का विभाजन प्रस्तुत करेगा। यह अवधि तभी सही ढंग से विभाजित की जा सकती है जब रौंदे जाने के दर्शन ("chazon") और प्रगटन के दर्शन ("mareh") के संबंध को सही ढंग से भेद किया जाए। गब्रिएल ने यह स्पष्ट करके आरंभ किया कि यहूदियों के लिए चार सौ नब्बे वर्षों की एक परीक्षात्मक अवधि दी गई थी। वह अवधि उसी चार सौ नब्बे वर्षों के विद्रोह के समान थी, जिसके परिणामस्वरूप सत्तर वर्षों का बंदीवास हुआ।

चौबीसवें पद में "निर्धारित" शब्द 457 ईसा पूर्व तीसरे फ़रमान के जारी होने से लेकर 34 ईस्वी में स्तेफ़नुस को पत्थरों से मार डाले जाने तक की अवधि को संबोधित करता है, परन्तु छब्बीसवें और सत्ताईसवें पदों में "निर्धारित" शब्द मूर्तिपूजकता और पोपवाद की उजाड़ मचाने वाली शक्तियों की पहचान कराता है।

और बासठ सप्ताह के बाद अभिषिक्त का नाश किया जाएगा, परन्तु अपने लिये नहीं; और आनेवाले प्रधान के लोग नगर और पवित्रस्थान को नष्ट करेंगे; और उसका अन्त बाढ़ के साथ होगा, और युद्ध के अन्त तक उजाड़ ठहराया गया है। और वह बहुतों के साथ एक सप्ताह के लिये वाचा दृढ़ करेगा; और उस सप्ताह के बीच में वह बलि और भेंट को बन्द कर देगा, और घृणित बातों के फैलाव के कारण वह इसे उजाड़ कर देगा, यहाँ तक कि

समाप्ति तक; और जो ठहराया गया है वह उस उजाड़े हुए पर उंडेला जाएगा। दानिय्येल 9:26, 27.

गब्रिएल दानिय्येल को बताता है कि 'मसीह' के 'कट जाने' के 'बाद' 'आने वाले राजकुमार के लोग नगर और पवित्रस्थान को नष्ट कर देंगे।' मूर्तिपूजक रोम ने 'नगर और पवित्रस्थान' को उस घेराबंदी में नष्ट किया जो ईस्वी सन् 66 से 70 तक ठीक साढ़े तीन वर्ष चली। गब्रिएल यह भी बताता है कि 'युद्ध का अंत' 'बाढ़ के साथ' होगा, और कि युद्ध 'उजाड़ों' से बना होगा। यरूशलेम और पवित्रस्थान के विरुद्ध जो युद्ध किया गया, वह मूर्तिपूजा और पापसी द्वारा किया गया पददलन था। आरंभ में यरूशलेम को नष्ट करने वाली मूर्तिपूजक शक्ति बाबुल थी, परंतु मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद उसे नष्ट करने वाली मूर्तिपूजक शक्ति मूर्तिपूजक रोम थी। किंतु पवित्रस्थान और सेना के विरुद्ध युद्ध दो उजाड़ करने वाली शक्तियों द्वारा किया गया, और शास्त्रों में इन दो उजाड़ करने वाली शक्तियों में दूसरी पापसी है।

पोपाई सत्ता वह शक्ति है जिसे "उमड़ता हुआ प्रकोप" के रूप में दर्शाया गया है; यह दानिय्येल ग्यारह के चालीसवें पद में वही शक्ति है, जो "उमड़ती है और पार निकल जाती है"। यरूशलेम का रौंदा जाना, जिसकी शुरुआत बाबुल से हुई और जो व्यवस्थाविवरण में मूसा द्वारा चित्रित उस लोहे के राष्ट्र के साथ जारी रहा जो गूढ़ वचन बोलता था, उसके बाद पोपाई सत्ता आई। रौंदे जाने के अंत तक "उजाड़" "ठहराए गए" थे। सत्ताईसवें पद में, मसीह बहुतां के साथ एक सप्ताह के लिए वाचा की पुष्टि करता है। उस सप्ताह के मध्य में, जब मसीह ने स्वर्ग में पवित्रस्थान में अपनी महायाजकीय सेवकाई आरंभ की, तब पृथ्वी की बलिदानी व्यवस्था समाप्त हो गई। उनके लिए अलग रखे गए परीक्षाकाल के दौरान यहूदियों की अवज्ञा के कारण, पवित्रस्थान और नगर फिर से उजाड़ किए जाने थे।

यह वचन कहता है: "घृणित बातों के व्यापक फैलाव के कारण वह उसे उजाड़ कर देगा, और यह उजाड़ समाप्ति तक रहेगा, और जो निर्धारित है वह उजाड़ पर उंडेला जाएगा।" जब यहूदियों ने अंततः अपने परख के समय का प्याला किनारे तक भर दिया, तब नगर और पवित्रस्थान युद्ध के अंत तक उजाड़ रहने थे। 1798 में पददलन की "समाप्ति" पर यह "निर्धारित" था कि पापाई सत्ता को एक मरणघातक घाव मिलेगा। तब नगर और पवित्रस्थान को पुनः बहाल और पुनर्निर्मित किया जाना था, जैसा कि प्रतिरूप द्वारा दिखाया गया था जब यहूदी तीन फ़रमानों के अधीन वास्तविक बाबुल से निकलकर आए।

उस युद्ध के समापन तक यरूशलेम को पापाई सत्ता द्वारा पददलित किया जाना था। तेईस सौ वर्षों के भीतर के विशिष्ट कालखंडों का गठन करने वाले भविष्यवाणी के कालखंडों को सही ढंग से तभी समझा जा सकता है जब सत्तर वर्षों के पददलित किए जाने के दर्शन का संबंध पवित्रस्थान और सेना की पुनर्स्थापना के दर्शन के साथ समझा जाए। मूसा के शाप द्वारा बिखराव के दर्शन को अस्वीकार करना, एकत्रीकरण के दर्शन को अस्वीकार करना है। सत्तर वर्षों का दर्शन बिखराव का दर्शन है। तेईस सौ वर्षों का दर्शन एकत्रीकरण का दर्शन है। सत्तर वर्षों का दर्शन बिखराव का "chazon" दर्शन है, और तेईस सौ वर्षों का दर्शन एकत्रीकरण का "mareh" दर्शन है।

इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे। मरकुस 10:9.

दोनों दर्शन भविष्यसूचक रूप से एक साथ जोड़ दिए गए हैं, और उनमें से एक को अस्वीकार करना, दोनों को अस्वीकार करना है। यह तथ्य दर्शाता है कि, यद्यपि एडवेंटिज़्म यह दावा करता है कि वे तेईस सौ वर्षों की भविष्यवाणी को बनाए रखते हैं, उन्होंने एडवेंटिज़्म के केंद्रीय स्तंभ को अस्वीकार कर दिया है, उतनी ही निश्चितता से जितनी उन्होंने 1863 में "सात बार" को अस्वीकार किया था। क्या यहूदियों ने परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने का दावा नहीं किया था? क्या प्राचीन इस्राएल ने मसीह की प्रतीक्षा करने का दावा नहीं किया था? यदि वह परमेश्वर के वचन को कायम नहीं रखता, तो मात्र दावा निरर्थक है।

मिलरवादियों ने अंततः 22 अक्टूबर, 1844 को तेईस सौ दिनों की अवधि के अंत के रूप में निर्धारित किया, पर उनकी समझ सीमित थी। स्वर्गीय पवित्रस्थान और उस तिथि को परमपवित्र स्थान में मसीह के प्रकट होने के विषय में प्रकाश महान निराशा के बाद ही आया। उस तिथि के बाद ही उन्होंने तीसरे स्वर्गदूत का संदेश और परमेश्वर की

व्यवस्था को समझा।

प्रभु का उद्देश्य तेईस सौ वर्षों से संबंधित भविष्यसूचक प्रकाश को बढ़ाना था, और 1856 में उन्होंने अधिक प्रकाश का द्वार खोला, और अगले सात वर्षों में एडवेंटिज़्म ने उस द्वार को बंद कर दिया। 11 सितम्बर, 2001 के बाद ही प्रभु ने भविष्यवाणी के छात्रों को हाइरम एडसन के लेखों की ओर वापस लौटाया, और 'सात समय' का प्रकाश एक बार फिर बढ़ने लगा।

2300 वर्षों की भविष्यवाणी और 2520 वर्षों की भविष्यवाणी के बीच संबंध को देखने से इनकार करते हुए, एडवेंटवाद ने 22 अक्टूबर, 1844 को कुंठित और अपूर्ण रूप में समझा।

जैसे ही S. S. Snow ने क्रूस पर चढ़ाए जाने की तिथि तय कर दी, 22 अक्टूबर, 1844 की तिथि निर्धारित हो गई।

इसलिये जान और समझ ले कि यरूशलेम को पुनः स्थापित करने और बनाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त राजकुमार के आने तक सात सप्ताह और बासठ सप्ताह होंगे; चौक और परकोटा फिर बनाए जाएँगे, वह भी क्लेशमय समयों में। और बासठ सप्ताह के बाद अभिषिक्त काट डाला जाएगा, परन्तु अपने लिए नहीं; और आनेवाले राजकुमार के लोग नगर और पवित्रस्थान को नष्ट कर देंगे; और उसका अंत बढ़ के साथ होगा, और युद्ध के अंत तक उजाड़ ठहराई गई है। और वह एक सप्ताह के लिए बहुतों के साथ वाचा को दृढ़ करेगा; और उस सप्ताह के बीच में वह बलि और भेंट को बंद कर देगा; और घृणित बातों के फैलाव के कारण वह उजाड़ करेगा, यहाँ तक कि अंत हो जाए, और जो ठहराया गया है वह उजाड़ पर उंडेला जाएगा। दानिय्येल 9:25-27.

मिलराइट्स ने सूली पर चढ़ाए जाने की सही तिथि को पहचाना, और फिर तेईस सौ वर्षों की अवधि के अंत की पहचान की गई। "सप्ताह के मध्य" में "मसीहा का काटा जाना"—जिसमें मसीह ने "वाचा" की पुष्टि की—यहूदियों द्वारा अपने परीक्षाकाल का प्याला ऊपर तक भर देने के कारण, जैसा कि "घृणित वस्तुओं के फैलाव" द्वारा दर्शाया गया, यह भी पहचाना गया। क्रूस वह ऐतिहासिक मार्गचिह्न बन गया जो मध्यरात्रि की पुकार के संदेश की पहचान के लिए अनिवार्य था।

उन पदों में निहित उस प्रकाश के बावजूद, जिसने परमेश्वर की सामर्थ्य का इतना प्रबल प्रकटीकरण उत्पन्न किया, मिलरवादी उन पदों की उस समझ तक कभी नहीं पहुँचे, जिसे दानिएल की दो दर्शनों के परस्पर संबंध को समझने की इच्छा द्वारा व्यक्त किया गया था। वह सप्ताह जिसमें मसीह ने वाचा की पुष्टि की, दो अवधियों में विभाजित था; बाद में सिस्टर वाइट ने इन्हें इस प्रकार पहचाना कि पहली अवधि मसीह की साढ़े तीन वर्षों की व्यक्तिगत सेवकाई का प्रतिनिधित्व करती है और दूसरी अवधि शिष्यों द्वारा प्रतिनिधित्वित उसकी सेवकाई का। उन्होंने देखा कि क्रूस का ऐतिहासिक मार्गचिह्न 22 अक्टूबर, 1844 की तिथि का निर्धारण करने के लिए लंगर बन गया, परन्तु उन्होंने यह नहीं देखा कि वह साढ़े तीन वर्षों की दो समान अवधियों के केंद्र का भी प्रतिनिधित्व करता है, और इस प्रकार 'सात काल' का द्योतक है, जिसे परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से 'अपनी वाचा का विवाद' कहा।

तब मैं भी तुम्हारे विरुद्ध चलूँगा, और तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें और भी सात गुना दण्ड दूँगा। और मैं तुम पर ऐसी तलवार लाऊँगा, जो मेरी वाचा के विवाद का बदला लेगी; और जब तुम अपने नगरों के भीतर इकट्ठे हो जाओगे, तब मैं तुम्हारे बीच महामारी भेजूँगा; और तुम शत्रु के हाथ में सौंप दिए जाओगे। लैव्यव्यवस्था 26:24, 25.

जब मसीह बहुतों के साथ वाचा की पुष्टि कर रहे थे, तब वह वही वाचा थी जिसे लेकर उनका अवज्ञाकारी यहूदियों से विवाद था। "उसकी वाचा का विवाद" 723 ईसा पूर्व में आरम्भ हुआ, जब असीरियों ने उत्तरी राज्य को बंधुवाई में ले लिया, और फिर बारह सौ साठ भविष्यवाणी के दिनों तक मूर्तिपूजा ने भौतिक इस्राएल को पददलित किया। उस पददलन के बाद बारह सौ साठ भविष्यवाणी के दिनों का एक और काल आया, जिसमें पोपतंत्र ने आध्यात्मिक इस्राएल को पददलित किया।

वह भविष्यवाणी का सप्ताह, जिसमें मसीह ने वाचा की पुष्टि की, जो तेईस सौ वर्षों के दर्शन की पूर्ति था, पच्चीस सौ बीस वर्षों के दर्शन का भी प्रतिनिधित्व करता था। मिलरवादियों ने तेईस सौ वर्षों की भविष्यवाणी को इतना समझा कि वे मध्यरात्रि की पुकार का संदेश सही ढंग से घोषित कर सकें, लेकिन उन्होंने उस प्रकाश का कुछ भाग अस्वीकार करना चुना, जिसे अध्याय नौ में गब्रिएल की व्याख्या द्वारा प्रेषित किया जाना था।

गैब्रियल ने दानिय्येल को यह निर्देश दिया था कि वह दोनों दर्शनों को ठीक प्रकार से विभाजित (मानसिक रूप से अलग) करे, जिन्हें "matter" और "vision" के रूप में प्रस्तुत किया गया था; और उस परामर्श की पूर्ति में बहन वाइट हमें बताती हैं कि यही दानिय्येल का बोझ था, जब वह सत्तर सप्ताह ("seven times" का एक प्रतीक) और तेईस सौ वर्षों के परस्पर संबंध को समझने का प्रयास कर रहा था।

'सात समय' को अस्वीकार करना एडवेंटिज़्म को ऐसी स्थिति में ले आया कि वे यह समझ नहीं सके कि तेईस सौ वर्षों में से काटे गए चार सौ नब्बे वर्षों का पहला कालखंड उस वाचा के विरुद्ध विद्रोह का प्रतिनिधित्व करता था, जिसे मूसा 'अपनी वाचा का विवाद' कहते हैं।

उन्हें यह पहचानने से भी रोका गया कि सप्ताह के मध्य में हुआ क्रूस पर चढ़ाया जाना केवल तिथि बताने भर से अधिक था, क्योंकि उसने वाचा के लहू के संदर्भ में इस्राएल की अवज्ञा के साथ मसीह के विवाद के ठीक केंद्र को चिह्नित किया। वे इस तथ्य से अंधे थे कि क्रूस पर बहुतों के लिए बहाया गया वही लहू, जो उसकी वाचा की पुष्टि कर रहा था, लैव्यव्यवस्था 25 और 26 में स्थापित वाचा की भी पुष्टि कर रहा था।

प्राचीन इस्राएलियों ने अपने ऊपर यह वाचा ली, जिसमें उन्होंने वाचा को इस घोषणा के रूप में परिभाषित किया: "जो कुछ प्रभु ने कहा है, हम वही करेंगे," इस बात से पूरी तरह अनभिज्ञ कि मसीह जो वाचा प्रस्तावित कर रहे थे, वह यह अपेक्षा करती थी कि उनकी व्यवस्था हृदयों पर लिखी जाए। वाचा की शर्तों की उनकी फरीसीय परिभाषा ने उन्हें सच्ची वाचा को समझने और स्वीकार करने से रोक दिया।

आधुनिक इस्राएल ने सप्ताह के बीचोबीच क्रूस के लहू को ऐसे शब्दों में परिभाषित किया है, जो आधुनिक इस्राएल पर वही अंधापन लाते हैं, जो प्राचीन इस्राएल पर तब था जब उन्होंने मसीह को अस्वीकार कर दिया और यह घोषित किया कि उनका कोई राजा नहीं सिवाय कैसर के।

आधुनिक इस्राएल इस तथ्य को नहीं देखता कि गब्रियल ने दानिय्येल के लिए जो इतिहास रेखांकित किया, उसमें केवल वाचा की पुष्टि ही नहीं, बल्कि उस वाचा को अस्वीकार करने वालों पर आने वाला विखराव भी शामिल है; क्योंकि वे पद बताते हैं कि मूर्तिपूजक रोम (वह आने वाला प्रधान) नगर और पवित्रस्थान को नष्ट करेगा, और कि युद्ध के अंत तक (जिसने पवित्रस्थान और सेना को रौंद डाला) "उजाड़ियाँ"—बहुवचन में—ठहराई गई थीं।

जिस इतिहास में मसीह ने बहुतों के साथ वाचा की पुष्टि करने के लिए अपना लहू बहाया, उसमें मूर्तिपूजक और पापाई रोम की दो उजाड़ने वाली शक्तियों की विशेष रूप से पहचान की गई है। क्रूस पर बहाया गया रक्त वही है जिसे मसीह स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रस्तुत करते हैं, और यह उनके उस कार्य का प्रतीक है जिसे "mareh" के तेईस सौ वर्षों के दर्शन द्वारा दर्शाया गया है। वह इतिहास "chazon" के पच्चीस सौ बीस वर्षों के दर्शन के इतिहास के साथ बुना हुआ है, जैसा कि उन दो उजाड़ने वाली शक्तियों द्वारा दर्शाया गया है जो पवित्रस्थान और सेना को रौंद डालेंगी।

मिलर के स्वप्न में रत्नों के रूप में प्रस्तुत किए गए सत्य सूर्य के समान चमक रहे थे, परन्तु वे अपूर्ण थे। अंतिम दिनों में, जब मध्यरात्रि की पुकार अक्षरशः दोहराई जाएगी, तो वही रत्न 'धूल झाड़ने वाले मनुष्य' द्वारा नए, बड़े सन्दूक में डाल दिए जाएंगे, और तब वे जितना पहले चमकते थे उससे दस गुना अधिक चमकेंगे। वे अंतिम मध्यरात्रि की पुकार के संदेश की कसौटी बन जाते हैं। उन रत्नों की पहचान हबककूक द्वारा भविष्यवाणी किए गए दो गवाहों ने विशेष रूप से पट्टिकाओं के रूप में की। जब 1843 और 1850 के प्रारम्भिक चार्टों की दो पट्टिकाएँ एक-दूसरे पर 'पंक्ति पर पंक्ति' रखी जाती हैं, तब मिलर के रत्न स्पष्ट रूप से पहचाने जाते हैं, और ऐसा करते हुए वे रत्न अंतिम मध्यरात्रि की पुकार

के संदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं।

दोनों चार्टों पर प्रस्तुत अधिकांश सत्य उन भविष्यवाणियों को दर्शाते हैं जो 1844 से पहले पूरी हो चुकी थीं, जैसे दानिय्येल सात और आठ के पशुओं की पहचान। दानिय्येल दो की प्रतिमा दर्शाई गई है। यह बहस कि दर्शन को स्थापित करने वाला रोम है या एंटियोकस एपिफानेस, वहाँ मौजूद है। पहली निराशा और हबक्कूक तथा दस कुँवारियों का प्रतीक्षा-काल वहाँ हैं। तीसरे स्वर्गदूत का आगमन वहाँ है, और स्वर्गीय पवित्रस्थान भी। "दैनिक" को मूर्तिपूजा के प्रतीक के रूप में वहाँ प्रस्तुत किया गया है। और स्वाभाविक ही, इस्लाम की तीन विपत्तियाँ वहाँ हैं। जब इन्हें एक साथ रखा जाता है, तो ये चार्ट "ज्ञान की वृद्धि" का ऐसा चित्रण प्रस्तुत करते हैं, जो तब होता है जब यहूदा के गोत्र का सिंह किसी भविष्यवाणी के सत्य पर लगी मुहर खोलता है।

जब हम उल्टी नदी के उस दर्शन पर अपना विचार समेटते हैं, जो उस भविष्यवाणी-ज्ञान का प्रतीक है जिसकी मुहर 1798 में अंत के समय खोली गई थी, और जो बढ़कर विलियम मिलर के स्वप्न के नए, बड़े संदूक में रत्नों का रूप बना, तब हम उन मिलेराइट सच्चाइयों की ओर लौटेंगे जो उनके इतिहास में अधूरी थीं। कुछ तो उस ऐतिहासिक काल के कारण अधूरी रह गई जिसमें मिलेराइट रहते थे, और अन्य तीसरे स्वर्गदूत की आगे बढ़ती ज्योति के साथ कदम मिलाने से इंकार करने वालों की अवज्ञा के कारण अधूरी छोड़ दी गई।

हम इन बातों को अगले लेख में जारी रखेंगे।

जिन्हें परमेश्वर किसी संदेश के साथ भेजता है, वे तो केवल मनुष्य होते हैं, पर जो संदेश वे लेकर आते हैं, उसका स्वरूप क्या है? क्या आप यह साहस करेंगे कि उन चेतावनियों से मुंह मोड़ लें, या उन्हें हल्के में लें, केवल इसलिए कि परमेश्वर ने यह जानने के लिए आपसे परामर्श नहीं किया कि क्या पसंद किया जाना चाहिए? परमेश्वर ऐसे मनुष्यों को बुलाता है जो बोलेंगे, जो ऊँचे स्वर में पुकारेंगे और हिचकिचाएँगे नहीं। परमेश्वर ने इस समय के लिए अपना कार्य करने को अपने संदेशवाहकों को खड़ा किया है। कुछ लोग मसीह की धार्मिकता के संदेश से मुंह मोड़कर मनुष्यों और उनकी कमियों की आलोचना करने लगे हैं, क्योंकि वे सत्य का संदेश उतनी अपेक्षित कृपा और परिष्कार के साथ नहीं बोलते। कहते हैं कि उनमें बहुत अधिक उत्साह है, वे बहुत अधिक गंभीर हैं, बहुत अधिक दृढ़तापूर्वक बोलते हैं; और इस प्रकार वह संदेश, जो बहुत-सी थकी-मांदी और पीड़ित आत्माओं के लिए चंगाई, जीवन और सांत्वना ला सकता था, किसी हद तक बाहर कर दिया जाता है; क्योंकि जितनी मात्रा में प्रभावशाली लोग अपने ही हृदय बंद कर लेते हैं और जो परमेश्वर ने कहा है उसके विरोध में अपनी इच्छा खड़ी कर देते हैं, उतनी ही मात्रा में वे उन लोगों से प्रकाश की किरण छीन लेने का प्रयत्न करेंगे, जो प्रकाश और जीवनदायी शक्ति के लिए लालायित रहे हैं और प्रार्थना करते रहे हैं। मसीह ने अपने सेवकों के विरुद्ध बोले गए सब कठोर, घमंडी, तिरस्कारपूर्ण वचनों का लेखा ऐसे रखा है, मानो वे उसी के विरुद्ध बोले गए हों।

तीसरे स्वर्गदूत का संदेश समझा नहीं जाएगा; जो प्रकाश अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करेगा, उसे उसकी बढ़ती हुई महिमा में चलने से इंकार करने वाले लोग झूठा प्रकाश कहेंगे। जो कार्य किया जा सकता था, वह उनके अविश्वास के कारण सत्य को अस्वीकार करने वालों से अधूरा रह जाएगा। हम आपसे, जो सत्य के प्रकाश का विरोध करते हैं, विनती करते हैं कि परमेश्वर की प्रजा के मार्ग से हट जाएँ। स्वर्ग से भेजा गया प्रकाश उन पर स्पष्ट और स्थिर किरणों में चमकने दें। जिनके पास यह प्रकाश आया है, उन्हें उसके उपयोग के लिए परमेश्वर उत्तरदायी ठहराता है। जो सुनना नहीं चाहेंगे वे उत्तरदायी ठहराए जाएँगे; क्योंकि सत्य उनकी पहुँच के भीतर ला दिया गया है, पर उन्होंने अपने अवसरों और विशेषाधिकारों का तिरस्कार किया है। दैवी प्रमाण लिए हुए संदेश परमेश्वर की प्रजा के पास भेजे गए हैं; मसीह की महिमा, प्रताप, और धार्मिकता—जो भलाई और सत्य से परिपूर्ण हैं—प्रस्तुत किए गए हैं; यीशु मसीह में परमेश्वरत्व की परिपूर्णता हमारे बीच सौंदर्य और मनोहरता के साथ प्रकट की गई है, ताकि वे सब आकर्षित हों जिनके हृदय पूर्वाग्रह से बंद नहीं थे। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने हमारे बीच कार्य किया है। हमने आत्माओं को पाप से धार्मिकता की ओर मुड़ते देखा है। हमने पश्चातापी लोगों के हृदयों में विश्वास को फिर से जागृत होते देखा है। क्या हम उन कोढ़ियों के समान होंगे जिन्हें शुद्ध किया गया, जो अपने मार्ग पर चले गए, और जिन में से केवल एक ही परमेश्वर को महिमा देने लौटा? अपितु

हम उसकी भलाई का बखान करें, और हृदय से, कलम से, और वाणी से परमेश्वर की स्तुति करें। रिव्यू एंड हेराल्ड, 27 मई, 1890.